अध्याय 5

सामाजिक नव निर्माण में पत्रकारिता की भूमिका

अध्याय - 5
सामाजिक नव निर्माण में पत्रकारिता की भूमिका :

साहित्य की भाँति पत्रकारिता भी समाज की विभिन्न गतिविधियों का दर्पण है। **'समसामयिक घटनाचक्र का शीध्रता में लिखा गया इतिहास'** पत्रकारिता कहा जाता है। समाचारों के संकलन और उनके मात्र प्रस्तुतीकरण के प्रारम्भिक सतर से लेकर आज तक पत्रकारिता के स्वरूप में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं।

आज पत्रकारिता सूचनाओं और समाचारों का संकलन मात्र न होकर मानव जीवन के व्यापक परिदृश्य को अपने में समेटे हुए हैं। वह शाश्वत नैतिक–साँस्कृतिक मूल्यों को समसामयिक घटनाचक्र की कसौटी पर कसने का साधन बन गई है।

ज्ञान–विज्ञापन, साहित्य–संस्कृति, आशा–निराशा, संधर्ष–क्रान्ति, जय–पराजय, उत्थान–पतन आदि जीवन की विविध भाव–भूमियों की मनोहारी एवं यर्थाथ् छवि हम युगीन पत्रकारिता के दर्पण में देख सकते हैं। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पत्रकारिता की 'विशिष्ट' भूमिका एवं योगदान बहुमूल्य है। जो समाज में अनेक मूल्यों को स्थापित करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

1. पत्रकारिता के सामाजिक आदर्श और उद्देश्य :

पत्रकारिता अपनी बहुमुखी प्रवृत्तियों के कारण समग्र मानव–जीवन को गहराई से प्रभावित करती हैं। **महात्मा गाँधी** के शब्दों में **'पत्रकारिता का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं – विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।**

गाँधीजी के इस कथन में पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका की स्पष्ट झलक देखने को मिलता है। पत्रकारिता देश की जनता की चित्तवृत्तियों, अनुभूतियों और आत्मा से साक्षात्कार करती हुई मानव मात्र को **'जीने की कला'** तथा **'जीवन के मूल्यों'** को समझाती और सिखाती है।

सत्य की खोज में रत रहते हुए समाज में उदात्त मूल्यों की स्थापना की दिशा में पत्रकारिता की भूमिका विशेष रूप में उल्लेखनाय है। समग्र रूप में पत्रकारिता के आदर्श्श को अन तीन भागों में समाहित किया जा सकता हैं –

- **सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए प्रयत्नशील रहना।**
- **समाज में एकता की भावना स्थापित करना।**
- **जन कल्याण**

ये उद्देश्य अपने में इतने पूर्ण है कि इनमें मानव प्रगती से लेकर सामाजिक सुधार लाने वाले आर्थिक विषय तक आ जाती है। तात्कालिक में शाश्वत, सामयिक में चिरन्तन तथा अनित्य में नित्य की खोज की महान

साधना में पत्रकारिता सामाजिक सांस्कृतिक एवं भ्रातृत्व की भावना को विकसित करने का सशक्त माध्यम हैं।

प्राचीन जीवन की व्याख्या एवं विश्लेषण हम अपने साहित्य एवं इतिहास में पाते हैं किन्तु वर्तमान जीवन की उुन्दरता एवं कुरूपता का कटु यथार्थ हम सामयिक पत्रों में ही देख सकते है।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय के शब्दों में – **'आधुनिक जगत में पत्रकारिता एक महती शक्ति है। वह जन–समुदाय की बलवती वाणी है। अपने विचारों, भावों को जन समुदाय तक पहुँचाने का वाहन है, लोकमत को जागृत करने का साधन है और जन शक्ति का प्रतिकार अस्त्र हैं।'**

उपर्युक्त उद्धरणों तथा विवेचन के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि पत्रकारिता समाज एवं राष्ट्र के बहुमुखी विकास में अप्रतिम योगदान दे सकने में सक्षम हैं। सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए हम यहाँ विविध क्षेत्रों में पत्रकारिता की इसी भूमिका का विवेचन करेंगें।

(क) सामाजिक जागरण और पत्रकारिता :

पत्रकारिता वस्तुतः 'जनता' की अभिव्यक्ति है। अतः उसे जनकल्याण तथा जन विचारधारा का प्रतिनिधि बनना होगा। समाज को सशक्त नेत्त्व देते हुए निराश और थके–माँदे जीवन में सत्साह तथा विश्वास का सम्बल प्रदान करना होगा। समाज के रचनात्मक विकास को प्रोत्साहन देते हुए विभिन्न धर्मों, जातियों एवं सांस्कृतिक एकता की दिशा में वर्तमान पत्रकारिता को विशेष रूप से अग्रसित होना होगा।

वर्तमान युग विज्ञान का युग हैं। विज्ञान एवं तकनीक के विकास ने हमारी सामाजिक मान्यताओं में भी जबर्दस्त परिवर्तन ला हदया है। इन परिस्थितियों के साथ हमें भी बदलना होगा। ऐसी परिस्थिति में पत्रकारिता का यह दायित्व हो जाता है कि वह समाज के स्वस्थ–विकास में अपना योगदान दे।

हमारे समाज के कुछ वर्ग अभी तक ऐसी दुषित परम्पराओं के जाल में जकड़े हुए हैं जो उनके विकास एवं प्रगति में बाधक बनी हुई हैं। दहेज जैसी कुप्रथा को हम आजादी के 5□2 वर्षो के बाद तक भी नहीं मिटा पाये हैं। ऐसी ही अन्य कुप्रथाओं के खिलाफ पत्रकारिता एक वातावरण तैयास करने में सक्षम है तथा सशक्त जन – आत्दोलन की मूल प्रेरणा के रूप में उभर कर समाज में स्वच्छता एवं नैतिकता को सामाजिक कुरीतियाँ हैं जिनके खिलाफ जन चेतना को जागृत करने में पत्र–पत्रिकाओं ने महती भूमिका निभाई है।

(ख) सांस्कृतिक जागरण और पत्रकारिता :

अतीत के प्रति गौरव भाव जागृत करते हुए वर्तमान की विषमता का विश्लेषण करते हुए सुनहरे भविष्य का स्वप्न पत्रकारिता ही दिखायी है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता ने ही भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था एवं विश्वास व्यक्त करते हुए आन्दोलन को सांस्कृतिक आधार प्रदान किया।

अपनी सांस्कृतिक परपम्पराओं से कटकर हम समाज को स्थायित्व नहीं दे सकते और न ही उसे एक सूत्र में बाँध सकते है। अतः पत्रकारिता का स्वरूप इस प्रकार निर्धारित किया जाए कि ये हमारे सांस्कृतिक जीवन को संरूचिपूर्ण ढंग से प्रतिबिम्बित करते हुए स्वस्थ मनोरंजन को प्रोत्साहित करें।

2. समाज में पत्रकारिता का स्थान

पत्रकारिता का समाज में क्या स्थान है और पत्रकारिता को जीवन में इतना महत्त्व क्यों दिया जाने लगा है? इस आधार पर मूल्यांकन करने के लिए निम्न मानदण्ड निर्धारित किये जा सकते हैं :–

- ❖ पत्रकारिता की सार्थकता।
- ❖ सामाजिक जनमत को प्रतिबिम्बित करना।
- ❖ समाज को उचित दिशा निर्देश देना।
- ❖ समाज को मनोरंजन सामग्री देना।

उपरोक्त मानदंण्डों पर खरी उतरने वाली पत्रकारिता निश्चित ही एक नवीन समाज की स्थापना करेगी। पत्रकारिता सच्ची घटनाओं या वास्तविकताओं पर इस तरह प्रकाश डालती है कि अंत में वे कल्याणकारी समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं या **"बहुजन हिताय"** की भावना का साधन बन जाते हैं।

पत्रकारिता में जीवन के यथार्थ को अधिकाधिक रूप में समाज को प्रभावित करने की जो क्षमता होती है यदि उसमें पूर्ण सच्चाई हो तो उस क्षमता को और भी बल मिलता है और अनिवार्यतः समाज उससे प्रभावित

होता है। परिणामतः व्यक्ति का निर्णय और उसका चिन्तन परिवर्तित हो जाता है। पत्रकारिता के लेखों और टिप्पणियों में सच्चाई होने के कारण उसका प्रभाव समाज पर अवश्य पड़ता है। पत्रकारिता के विषय में कुछ भी हो पर उनमें तथ्य और सत्य की संगति होनी चाहिए।

इस प्रकार पत्रकारिता का मुख्य यह है कि जन्मजात प्रवृत्ति से सीधा–संपर्क जुड़ता है। पत्रकारिता समाज को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पत्रकारिता के आदर्श का संवहन करने वाली पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका समाज के अग्रदूत रूप में प्रशंसनीय है।

2. पत्रकारिता का सामाजिक योगदान :

पत्रकारिता समाज–निर्माण और सामाजिक मार्गदर्शन का कार्य करती है। उसमें निहित शक्तियों के माध्यम से हम अपनी कला और संस्कृति की धरोहर से भी परिचित होते रहते हैं। तब ऐसा अनुभव होता है कि जैसे निर्माणकारी तत्त्व पत्रकारिता से भी कुछ दूर नहीं है। अनेक रूपों द्वारा वह सामाजिक दिशा बोध का काम सम्पन्न करती है।

साहित्य भी अनुभूतियों और वैचारिक रीतियों के जरिये जीवन निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न रहता है। तात्पर्य यह कि निर्माण का तत्त्व दोनों में समान रूप से मौजूद है, किन्तु उसकी उपलब्धि के मार्ग पृथक्–पृथक् है। पत्रकारिता वस्तुओं पर सीधी चोट करती हुई स्वयं में निर्माण क्षमताओं का विकास करती है।

साहित्य सर्जक ने अनेक बार नव–चेतना और नव–जागरण का मंत्र फूँकते हुए समाज सुधार का कार्य किया है। जब कि यह कार्य पत्रकार–धर्म के अन्तर्गत आता है, साहित्य कर्म के अन्तर्गत उतना नहीं यद्यपि साहित्यकार यह मानता है कि उसे युग धर्म का ध्यान रखते हुए सदा शाश्वत् मूल्यों की ही चिन्ता करनी चाहिए।

तथापि वह समसामयिक घटनाओं और स्थितियों को भुलकर कभी आगे नहीं बढ़ सकता। नवोदित और विकासशील शब्दों के निर्माण तथा उनकी प्रगति में भी समाचारों–पत्रों ने कुछ कम योग नहीं दिया है। अंधी परम्पराओं के उन्मूलन, जाति, वर्ग और लिंग सम्बन्धी मानवीय अन्तर को पाटने तथा नवीन मूल्यों की स्थापना करने में भी समाचार–पत्रों के व्यावहारिक रूख का पर्याप्त महत्त्व है।

अभी कुछ वर्षों पूर्व तक भारतीय जन जीवन अंधी परम्पराओं, थोथी मान्यताओं और पिछड़ी हुई जीवन पद्धतियों का आदि था, किन्तु पत्रकारिता में उनके विरूद्ध नियमित प्रकाशित होने वाली सामग्री ने यहाँ के लोगों की विचार–दिशा बदली और उन्हें प्रगतिशील तरीके से सोचने को बाध्य किया।

नई और व्यावहारिक जीवन पद्धतियों को लागू करने में समाचार–पत्रों को कोई कसर नहीं उठाए रखनी चाहिए। नवीन सामाजिक विचारों के पोषण और स्वस्थ जीवन प्रणाली के निर्माण में समाचार–पत्र सदा आगे रहते आये है और आते रहेंगे।

4. आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज का अविर्भाव ही मानव की परिष्कृत चेतना का अप्रतिम–रूप है। प्रत्येक मनुष्य का इस अतिम–रूप है। प्रत्येक मनुष्य का इस अप्रतिम–रूप, समाज की इकाई भी है। अतः इकाई मानवों के इस सायुज्य रूप समाज को भी चेतना के परिष्कृत रूप का प्रति–बिंब होना चाहिए।

इस प्रकार मानव को अपने रूप की अति चेतना अनुकृति देखकर अनिर्वचनीय आनंद प्राप्त हो सकेगा। समाज की पूर्णता प्राप्त करने के लिए मानव आदिकाल से ही चिन्तनरत है। सामाजिक जीवन के प्रभात से ही मानव की यह जिज्ञासा रही है, कि वह उन श्रेष्ठतम लोकोत्तर गुणों को खोज निकाले कजनको अपनाकर वैश्विक मानव–समाज में चेतना के अतिमानस का दिग्दर्शन हो सके।

अर्थात एक ऐसा समाज हम चाहते है जिसमें हो सत्य, अहिंसा, शांति, ईमानदारी, सहिष्णुता, अनुशासन, सहकारिता, सद्भाव, स्वच्छता, देशप्रेम, सदाचार, निष्ठा, त्याग और हो उसमें आस्तिकता का महामंत्र। जब–जब समाज में निर्धारित मूल्यों में गिरावट आई है या सामाजिक चरित्र का पतन हुआ है, तब–तब पत्रकारिता के माध्यम से सनातन मूल्यों की पुर्नस्थापना की गई हैं।

आधुनिक समाज में सनातन मूल्यों की अचानक गिरावट आई है। लोगों में देशप्रेम, सत्य, ईमानदारी के स्थान पर केवल विलासिता, बेईमानी, धन–लोलुपता की बाढ़ आ गई है। हिंसा आज चरमसीमा पर पहुँच चुकी है।

मानव – मानव के रक्त का प्यासा हो गया है, ऐसे समय निश्चित ही सनातन मूल्यों की पुनर्स्थापना पर विचार करना एक समीचीन कार्य है।

हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आदि मूल्यों की उपादेयता एवं औचित्य के साथ जुड़ा हुआ अत्यंत सार्थक एवं सटीक प्रश्न यह है कि हमारी जीवन–शैली कैसी है और कैसी होनी चाहिए? हम किस प्रकार की जीवन शैली कैसी है अपनाना चाहते है। आज प्रायः ओंसत बुद्धिवादी के सामने कुछ अहम सवाल उठते रहते हैं और उसे उलझन में डालते रहते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह होता है कि उन्हें 'स्वंय' अपने मूल्य स्पष्ट नहीं होते।

पत्रकारिता यहाँ समाज की सहायता करती है जो जीवन मूल्यों को स्पष्ट सिद्ध करने में सहायक होती है। पत्रकारिता में मूल्यों के स्पष्टीकरण (Clarification of Values) पर विशेष बल दिया है। जब मानव को अपने मूल्य स्पष्ट होंगे तभी वी मूल्यपरक निर्णय (Value Judgement) निष्पक्ष एवं युक्तिसंगत रूप में ले सकेगा।

आखिर लोगों को क्रूर एवं स्वार्थी अथवा परोपकारी एवं उदार बनाने के लिए उनके जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण उनके नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्य ही तो उत्तरदायी हैं। आधुनिकीकरण के कारण समाज के नैतिक समाज के नैतिक मूल्य सुबह कुछ होते है और रात को कुछ और हो जाते है।

मूल्य ऐसे ही बदल जाते है जैसे के तेज हवा के झोकों से बादलों की दिशा बदल जाती है। मानव भी उसी प्रकार इन बदलते मूल्यों के साथ–साथ चलकर कहीं खो जाता है। ऐसे ढूबते मूल्यों को समाज में और भी अधिक स्थिर करने का कार्य पत्रकारिता का होता है। हमारे विविध सामाजिक संस्कृति रही है। संस्कृति हमारे प्राचीन मूल्यों का सम्पोषण एवं नियन्त्रन करती आई है।

मानव जीवन में पाई जाने वाली कुछ आध्यत्मिक मूल्यों की शुरूआत कहा से हुई यह जानता आवश्यक है। जन्मते ही बालक परिवार का सदस्य हो जाता है। परिवार में रहकर जन्म से ही पारस्परिक व्यवहार के संस्कार एवं पारिवारिक कर्तव्यों की जानकारी भी पाता है स्नेह, त्याग, दया, कर्तव्य, परोपकार, मैत्री आदि नैतिक मूल्यों की शिक्षा वह परिवार में ही पाता है।

धैर्य, क्षमा, मन की एकाग्रता, अस्तेय, शुद्धि, इन्द्रिय–निग्रह, विद्या, सत्य और अक्रोध। जिस मनुष्य में ये मूल्य पाये जावे वह सत्पुरूष हे,सच्चरित्र है। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक जीवन–मूल्य है जिनका विकास पत्रकारिता जैसे जनसंचार माध्यमों द्वारा संभव है।

निष्कर्ष:

अतः जीवन मूल्य व्यक्ति की उन्नति तथा समाज की व्यवरूथा एवं प्रगति के लिए स्थापित किये जाते है। कुछ जीवन–मूल्य इतने नैसर्गिक और आम होते है कि वे ईश्वरीय नियम की तरह सर्वत्र माने जाते है।